International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 9, September- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

कबीर दास: एक समाज सुधारक

सोनिया सांगवान
एम.ए. हिन्दी
एफ.जी.एम. कालेज, आदमपुर, हिसार
DOI:euro.ijress.44565.22132

शोध सार:-

कबीर दास भक्तिकाल की निर्गुण धारा के कवि है। ये संत, फकीर, भक्त और समाज सुधारक थे। जिनके जैसा आज तक न तो कोई हुआ है और न ही होगा। कबीर दास जी हिन्दी साहित्य के एक महान कवि होने के साथ-साथ बहुत बड़े समाज सुधारक भी थे। उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से समाज का मार्गदर्शन तथा कल्याण किया है। जिससे मानव निंदा, अहंकार, छल-कपट, कुसंगति, धार्मिक पाखंड, जातिगत भेद-भाव को छोड़कर मनुष्य एक अच्छा व्यक्ति बन सकता है। उन्होंने समाज में व्याप्त अंधविश्वासों व रूढ़ियों पर करारा प्रहार किया है। उन्होंने एक सामान्य गृहस्वामी और एक सूफी के संतुलित जीवन को जीया। उन्होंने अपने जीवन में अहिंसा, सत्य, सदाचार को अपनाया और दूसरों को भी इस की सीख दी। क्रांतिकारी प्रवृति का होने के कारण उन्होंने ऊँच-नीच व समाज में व्याप्त जाति-पाति के भेद-भाव का विरोध किया। वे एक सर्वोच्च ईश्वर में विश्वास रखते थे।

कबीर का प्रादुर्भाव ऐसे समय में हुआ जब समाज अनेक बुराइयों से ग्रस्त था। उस समय किसी ऐसे महान कवि या समाज सुधारक की आवश्यकता थी जो समाज में व्याप्त इन बुराइयों पर निर्भीकता से प्रहार कर सकें और हिन्दु व मुसलमान दोनों धर्मों के अनुयायियों को बिना किसी भेदभाव के फटकार सकें और सदाचरण का उपदेश दे कर सामाजिक समरसता की स्थापना कर सकें।

मुख्य शब्द: भक्ति, दार्शनिक, सदकर्म, अज्ञानता, निरन्तर, स्तुत्य, साम्प्रदायिकता आदि।

हिन्दी साहित्य के इतिहास को 4 भागों में बांटा गया है। हिन्दी साहित्य के इतिहास का दूसरा काल भक्ति काल या स्वर्ण युग के नाम से जाना जाता है। भक्तिकाल के निर्गुण काव्य धारा के ज्ञान मार्गी, संत काव्य धारा के प्रतिनिधि कवि कबीर दास जी है। इस सागर रूपी संसार में बहुत से रत्नों का जन्म हुआ। हमारे भारतवर्ष में तो बहुत से रत्नों ने जन्म लिया है। उन्हीं महान रत्नों में से एक थे - संत कबीरदास जी। ये एक समाज सुधारक, कवि, भक्त तथा फकीर थे। कबीर दास जी का जन्म 1398 ई. में माना जाता है। उनके जन्म और माता-पिता को लेकर बहुत विवाद है लेकिन यह स्पष्ट है कि कबीर जुलाहा थे। भक्त कबीर रामानन्द के शिष्य थे तथा वैष्णवों के प्रति आदरभाव रखते थे।

कबीर अपने ब्रह्मा को निर्गुण और सगुण से परे मानते थे उनका कहना था कि ''हम निर्गुण तुम सर्गुण जाना।''

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 9, September- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

इस प्रकार वे निर्गुण काव्य धारा के संत कवि माने जाते हैं। उनका ब्रह्मा न तो वेद ग्रंथ लिखित ईश्वर है न कुरान लिखित खुदा। कबीर दास जी को पढ़ना लिखना नहीं आता था किंतु उनमें विलक्षण काव्य प्रतिभा विद्यमान थी। उनका कहना है कि -

''मसि कागद छूयो नहीं कलम गहयो नहिं हाथ।''[1]

कबीर दास जी ने सन् 1518 को काशी के पास मगहर में देह त्याग किया। उनके जन्म की भांति मृत्यु तिथि को लेकर भी मतभेद है। ऐसी मान्यता है कि मृत्यु के बाद उनके शव का अंतिम संस्कार मुस्लिम रीति से होना चाहिए था या हिन्दु रीति-रिवाज से। इस विवाद के चलते जब उनके शव से चादर हटा तो शव नहीं बल्कि कुछ फूल मात्र ही पड़े हुए थे। तत्पश्चात् कुछ फूल हिन्दुओं ने व कुछ मुसलमानों ने उठाये व अपने-अपने रीति रिवाज के अनुसार फूलों का अंतिम संस्कार किया। उनके साहित्य में समाज सुधारक की भावना है। कबीर ने विभिन्न क्षेत्रों में समाज सुधार का सतुत्य प्रयास किया है। जिसे इस प्रकार देख सकते हैं।

1. **ईश्वरी भक्ति:** कबीर दास जी ने समाज में फैले पाखण्ड, अंधविश्वास, रूढ़िवादिता, मिथ्या-चार, हिंसा, छुआछुत, भेद-भाव आदि का विरोध किया है, हिन्दू-मुसलमान आपस में झगड़ते रहते थे। कबीर जी चाहते थे कि हिन्दू और मुसलमान प्रेम और भाईचारे की भावना से एक साथ मिलकर रहें। उनका मानना था कि संसार में सभी मानव एक ही ईश्वर की संतान है। उनका कहना था कि ईश्वर हमारे कण-कण तथा हमारी अन्तरात्मा में बसते हैं। वे कहते थे कि जिस प्रकार हिरण कस्तूरी की खुशबू को जंगल में ढूँढता फिरता है लेकिन वह उसकी नाभि में होती है उसी प्रकार मनुष्य भी भगवान को तीर्थ व मन्दिरों में ढूँढ़ता फिरता है लेकिन ईश्वर हमारे कण-कण में विद्यमान है।

''कस्तूरी कुण्डली बसै, मृग ढूढें वन माहि।
ऐसै घटि घटि राम है, दुनियां देखे माहि।''[2]

2. **प्रेम का प्रसार और अहंकार का त्याग:** कबीर दास जी ने प्रेम के मार्ग को अपनाया है। उनका कहना है कि प्रेम के द्वारा समाज में फैली अनेक बुराईयों को दूर किया जा सकता है। वे कहते थे कि मनुष्य को अहंकार नहीं करना चाहिए। बड़ी-बड़ी किताबें पढ़कर कितने ही लोग मृत्यु को प्राप्त हो गए लेकिन सभी विद्वान नहीं हो सके। कबीर मानते है कि यदि कोई प्रेम (प्यार) का वास्तविक रूप पहचान ले तो वही सच्चा ज्ञानी होगा।

''पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय।।''[3]

3. **जाति पाति और भेद-भाव का खण्डन-निर्गुण:** कवि कबीर दास जी ने मनुष्य मात्र की समता में विश्वास रखते हुए जाति पाति के बंधनों और भेद-भाव व ऊँच-नीच के विचारों का खण्डन किया है। उन्होंने सबको एक ही साई के बन्दे मानकर सभी दृष्टियों से यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि जब सब की देह में एक ही परम सत्ता की चेतना व्याप्त है तो उसमें अन्तर होने की कल्पना भी नहीं

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 9, September- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

की जा सकती। अपने व्यंग्यपूर्ण शब्दों में उन्होंने कह दिया है कि -

''जो तूं ब्राह्मण ब्राह्मणी का जाया।
आन बाट काहे नहीं आया।''[4]

4. मूर्ति-पूजा का विरोध: कबीर जी ने समाज में व्याप्त-मूर्ति पूजा का डटकर विरोध किया वे सामान्य जनता को समझाते हुए कहते हैं कि मूर्ति-पूजा से भगवान नहीं मिलते वे कहते हैं कि अगर पत्थर पूजने से ईश्वर मिलता हो तो मैं पहाड़ को पूज लेता। इससे तो घर की चक्की ही अच्छी है जिससे सारा संसार आटा पीस कर खाता है।

पाहन पूजैं हरि मिलैं तौ मैं पूजूं पहार
घर की चाकी कोई न पूजै पीस खाये संसार।[5]

5. धार्मिक पाखण्ड का खण्डन: समाज सुधारक कबीर दास ने मानव कल्याण की भावना से प्रेरित होकर काव्य रचना की है। कबीर ने हिन्दु-मुसलमान दोनों के पाखण्डों का खण्डन किया तथा उन्हें सच्चे मानव धर्म को अपनाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने दोनों को कसकर फटकारा।

हिन्दू अपनी करे बड़ाई, गागरि छुअन न देई
वेश्या के पायन तर सोवें यह देखो हिन्दुआई।

कबीर ने मुसलमानों के पाखण्ड का भी खण्डन करते हुए कहा -

''कांकर-पाथर जोरि कै मसजिद लई चुनाय।
ते चढ़ि मुल्ला बांग दे, क्या बहिरा हुआ खुदाय।।''[6]

6. हिंसा का विरोध: कबीर ने हिंसा का विरोध हर प्रकार से किया है चाहे वह जीभ के स्वाद के लिए की गई हों या धर्म के नाम पर की जा रही हो। मुसलमान दिन में रोजा रखते हैं और रात को गाय की कुर्बानी देते हैं। ये दोनों ही विरोधी कार्य है, इससे भला खुदा कैसे प्रसन्न हो सकता है।

''दिन में रोजा रहत है राति हनत है गाय
यह तौ खून वह बंदगी कैसे खुसी खुदाय।''[7]

7. पुस्तकीय ज्ञान का खण्डन: कबीर दास जी शास्त्रीय ज्ञान पर नहीं बल्कि आचरण की शुद्धता (सदाचरण) पर बल देते है।

''तू कहता कागद की लेखी मैं कहता आंखिन की देखी,
मैं कहता सुरझावन हारी तू राखा उरझोय रे।।''[8]

8. लोक कल्याण की भावना: कबीर दास जी समाज के कल्याण के लिए लोक मंगल की भावना को प्रोत्साहित करते है। वे कहते है कि सभी मानव एक ही ईश्वर की उपज है। इसलिए संकीर्ण व स्वार्थी भावना को छोड़कर मिल-जुल कर रहने पर बल देते हैं।

''कबीर खड़ा बाजार में, मांगे सब की खैर

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 9, September- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

ना कांहू से दोस्ती, ना कांहू सौ बैर।''[9]

9. राम-रहीम की एकता पर बल: कबीर दास जी ने राम-रहीम की एकता पर बल दिया है। उन्होंने सम्पूर्ण समाज को एकता के सूत्र में बांधने का प्रयास किया। उन्होंने कहा है -

दुई जगदीश कहां ते आया, कहु कौनै भरमाया।[10]

10. अवतारवाद का खण्डन: कबीर ने अवतारवाद का खण्डन किया। वे मानते थे कि अवतारवाद के नाम पर पण्डे-पुरोहित जनता को ठग रहे हैं। वे 'राम' को दशरथ पुत्र न मानकर निर्गुण ब्रह्मा मानते हैं।

दसरथ सुत तिंहू लोक बखाना।
राम नाम का मरम है आना।[11]

11. संपूर्ण संसार एक परिवार: कबीर दास जी संपूर्ण संसार को एक परिवार मानते थे। वे मानते थे कि दया, विनम्रता और सदाचरण से जीवन को उत्कृष्ट बनाया जा सकता है। हमें अपने स्वार्थ व अहंकार को त्याग कर आपस में मिल-जुल कर रहना चाहिए। कबीर दास जी कहते थे कि जो शील स्वभाव का होता है मानों वो सब रत्नों की खान है -

'शीलवन्त सबसे बड़ा, सब रतनन की खान
तीन लोक की सम्पदा, रही शील में आन।'[12]

कबीर दास जी कहते है कि समाज तभी सभ्य व उत्तम बन सकता है जब हिन्दुओं तथा मुस्लिमों के मध्य भेदभाव को मिटाया जा सकें। समाज में साम्प्रादिय सौहार्द और धार्मिक सद्भावना को बढ़ावा मिल सकें। उन्होंने समाज में फैली अनेक कुरीतियों और आडम्बरों का पुरजोर विरोध किया और अपने साहित्य के माध्यम से समाज को सुधारने का प्रयास किया है।

निष्कर्ष:

कबीर दास जी एक संत, एक सफल कवि व बड़े समाज सुधारक थे। कबीर दास जी की काव्य रचना का मूल उद्देश्य लोक हित था। समाज सुधारक के रूप में उन्होंने जिस उपदेश मूलक काव्य की रचना की उसके पीछे भी लोक कल्याण की भावना निहित थी। इस प्रकार कबीर एक महान् समाज-सुधारक, सत्य धर्म के प्रतिपादक, समन्वयवादी तथा क्रांतिदर्शी थे। वे समाज में प्रचलित प्रत्येक प्रकार की असमानता, रूढ़ियों, बाह्य आडम्बरों व कुरीतियों को समाप्त कर देना चाहते थे, जिनका उन्होंने पुरजोर विरोध किया है।

निश्चय ही कबीर का व्यक्तित्व क्रांतिकारी चेतना से युक्त था। उन्होंने अपने समय में निर्भिकतापूर्वक समाज सुधार का जो प्रयास किया है वह अनुपम व अद्वितीय है। कबीर दास जी का भाषा पर जबरदस्त अधिकार था इसलिए आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने उन्हें 'वाणी का डिक्टेटर' कहा है।[13]

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 9, September- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. बीजक (धर्मदास)
2. कबीर ग्रन्थावली श्याम सुन्दर दास
3. कबीर बीजक, कबीर दास।
4. कबीर ग्रन्थावली श्याम सुन्दर दास
5. कबीर ग्रंथावली माता प्रसाद
6. बीजक
7. कबीर, विजय झा
8. कबीर वाणी, अली सरदार जाफरी
9. कबीर ग्रंथावली, श्याम सुन्दर दास।
10. कबीर वाणी, अली सरदार जाफरी
11. कबीर वाणी, अली सरदार जाफरी
12. हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल।